पद २४

(राग: तिलकामोद - ताल: धुमाळी)

कोठे गेला प्राणनाथ। धुंडूं कवण्या काननांत। मांडिला हो प्राणांत। किंधे भेटेल माझा कांत। सांग गे साजणी।।ध्रु.।। फिरल्यें मी बहुत फेरी त्रासल्यें हो या संसारी। कोणी मम नाही कैवारी। शांति येईल केंवि अंतरी। सांग गे साजणी।।१।। जन्म जातो हा वाया। बहु शिणविली काया। परि चुकेचि ना माया। किंधे पाहीन कांतपाया। सांग गे साजणी।।२।। नयन वाट पाहती। दैन्यें दीनवाणी भाकिती। थकली हो मनोहरमित। आतां कधीं पाहिन माणिक मूर्ति। सांग गे साजणी।।३।।